

## मैकॉले शिक्षण पद्धति



“I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief. Such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their self-esteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation.”



LORD MACAULAY'S ADDRESS TO THE BRITISH PARLIAMENT

2. 2. 1835



19वीं शताब्दी के आरम्भ तक भारत अपनी शिक्षा व्यवस्था के लिए पूरे विश्व में न केवल प्रसिद्ध था बल्कि लोग देश विदेश से शिक्षा ग्रहण करने यहाँ आते थे। इसी शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय समाज को एक मजबूत आधार प्रदान किया। परंतु अंग्रेजों के षड्यंत्रों ने इस शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया और आज हाल यह है कि जो विदेशी है, हम उसी को श्रेष्ठ समझते हैं। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक : [https://docs.google.com/file/d/0B8n\\_36gK-KF4U0gxZExXRGpoX0U/edit?usp=sharing](https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4U0gxZExXRGpoX0U/edit?usp=sharing)

भारतीय संस्कृति को समूल नष्ट कर देने के उद्देश्य से अंग्रेजी सरकार ने एक अधिकारी का चयन किया जिसका नाम था - मैकॉले। यह अधिकारी अपनी एक टीम के साथ सन 1815 के लगभग भारत में आया और यहाँ आकर उसने भारतीय संस्कृति पर एक सर्वेक्षण कराया। सर्वेक्षण में पता चला कि भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का काम करते हैं गुरुकुल। यही भारतीय संस्कृति की रीढ़ की हड्डी हैं! मद्रास प्रेसिडेंसी के अपने सर्वेक्षण में उसने लिखा है कि भारत के केवल दक्षिण प्रदेश में ही लगभग डेढ़ लाख उच्च विद्यालय या गुरुकुल हैं जहाँ प्राथमिक शिक्षा से ऊपर की शिक्षा दी जाती है जिसे हम advance studies भी कहते हैं। उस समय दक्षिण प्रदेश में एक लाख सत्तावन हजार गाँव थे अर्थात् हर गाँव में एक उच्च स्तरीय विद्यालय। इन विद्यालयों में 70% विद्यार्थी क्षुद्र जाति के थे और बाकी के 30% क्षत्रिय, ब्राह्मण तथा वैश्य

थे। ये सब मैकॉले के दिए हुए आँकड़े हैं। इन आंकड़ों से यह सिद्ध होता है कि भारत में जाति पांति को लेकर ऐसा कोई मतभेद नहीं रहा जैसा कि अंग्रेज़ हमेशा प्रचारित करते आए हैं कि अमुक जाति ने नीची जाति पर जुल्म किए, आदि। अगर ऐसा होता तो इतनी भारी तादाद में क्षुद्रों को पढ़ने का मौका न दिया जाता!

दक्षिण में एक जाति है जिसका नाम है पेरियार। 19वीं शताब्दी तक इस जाति का प्रमुख व्यवसाय था मंदिर तथा भवन निर्माण करना। इनके हाथों में ऐसी अद्भुत दक्षता थी कि देखने वाले इनकी कृतियों को देखते रह जाते थे। पेरियार जाति के सभी लोग तत्कालीन गुरुकुलों से भवन निर्माण की कला सीखा करते थे। आज भी यदि आप दक्षिण में जाएँ तो आप देखेंगे कि कितने मजबूत और दक्षता के साथ इन्होंने भवन निर्माण किए हैं, उदाहरण के लिए मदुरै का मंदिर। A O Hume, जो कांग्रेस पार्टी का जनक था, उसने एक कानून बनाया कि पेरियार जाति के लोग अब भवन निर्माण नहीं करेंगे। उनके द्वारा किए गए नए भवनों को गैर कानूनी घोषित कर दिया जाएगा। इस कानून के चलते कई लोगों से रोज़गार छिन गया और वह अद्भुत कला कौशल भी दब कर कहीं रह गया।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था को तोड़ने की दिशा में जो सबसे पहला कदम मैकॉले ने उठाया वो था, गुरुकुलों को अवैध घोषित करना। इसके लिए उसने एक कानून बनाया जिसका नाम है Indian Education Act (यह आज भी लागू है)। जब गुरुकुल अवैध हो जाएँगे तो गुरुकुलों में आने वाला दान भी अवैध हो जाएगा और धीरे धीरे सारे गुरुकुलों को बंद होना ही पड़ेगा। यह अंग्रेज़ों की एक बहुत ही सोची समझी चाल थी। इसके बाद का जो अगला कदम था, वो था कॉन्वेंट स्कूलों की स्थापना करना। आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि यूरोप में कई शताब्दियों तक तो यह हाल था कि लोग अपने नवजात शिशुओं को

अनाथालय या चर्च में छोड़ जाते थे क्योंकि वहाँ मध्यकालीन युग में इतनी घोर गरीबी थी कि परिवार का लालन पालन मुश्किल हो जाता था। ऐसे लावारिस बच्चों के लिए वहाँ विशिष्ट प्रकार के स्कूल खोले जाते थे जिन्हें कॉन्वेंट कहा जाता था। भारत में सबसे पहला कॉन्वेंट स्कूल खोला गया कलकत्ता में परंतु यह भारत के लावारिस बच्चों के लिए नहीं था अपितु भारतीय शिक्षा व्यवस्था को नष्ट करने के लिए था। अब दुविधा यह थी कि इन स्कूलों में कोई अपने बच्चों को पढ़ने नहीं भेजता था क्योंकि उनके हिसाब से यह सब फालतू स्कूल थे। इसके लिए अंग्रेज़ों ने एक व्यक्ति को चुना जो गाँव गाँव जाकर लोगों को कॉन्वेंट पढ़ाई बच्चों को दिलाने के लिए राज़ी कर सके। उस व्यक्ति का नाम था राजाराम मोहन राय।

राजाराम मोहन राय अंग्रेज़ी हुकूमत में एक क्लर्क की हैसियत से नौकरी करते थे। अंग्रेज़ों ने कहा कि आप जाओ और गाँव गाँव में लोगों को इकट्ठा करके उन्हें समझाओ कि गुरुकुल में पढ़ना पढ़ाना तो अब अपराध है और उन्हें कॉन्वेंट शिक्षा के लिए प्रेरित करो। स्वामिभक्त राजाराम मोहन राय अब गाँव गाँव घूमने लगे और लोगों में अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रचार करते रहे। एक बार जब वे बंगाल के बर्धमान जिले में पहुंचे तो बहुत ही मनोरंजक घटना घटी। बर्धमान के एक गाँव में वे किसानों की एक सभा को समझा रहे थे कि बच्चों को कॉन्वेंट स्कूल में भेजो तो उनमें से एक किसान ने पूछा कि कॉन्वेंट स्कूल में भेजने से क्या होगा तो राममोहन ने कहा कि उससे तुम्हारा बच्चा सूट बूट और टाई लगायेगा। किसान ने पूछा कि टाई क्या होती है तो राममोहन ने कहा कि लन्दन में बहुत ठण्ड होती है इसीलिए वहाँ के लोग गले में एक पट्टा पहनते हैं नाक पोंछने के लिए। किसान ने कहा कि हमारे देश में तो गर्मी पड़ती है फिर मेरे बच्चे टाई का क्या करेंगे? राममोहन अब असमंजस में पड़ गए और उन्हें वहाँ से खिसक लेना ही अधिक आसान रास्ता सूझा।

कॉन्वेंट स्कूलों में सबसे पहला पाठ्यक्रम सन 1858 में बनकर तैयार हुआ जिसका सबसे पहला विषय था Christianity| यदि गुरुकुलों के साथ इसे लागू किया होता तो एक बात थी परंतु गुरुकुलों को अवैध घोषित करके इसे लागू करना सीधे तौर पर षड्यंत्र की ओर इशारा करती है। क्या आपको पता है यदि आप अपनी मातृभाषा में कोई काम करते हैं तो उसी काम को करने में आपको 6 गुणा तक अधिक समय लग सकता है यदि आप उसी काम को किसी विदेशी भाषा में करते हैं? इसका सबसे सरल उदाहरण है कि जब आप बहुत खुश होते हैं या बहुत दुखी होते हैं तो आपके मन में जो विचार उठते हैं, वो आपकी मातृभाषा में होते हैं! आप जब किसी को गाली भी देते हैं तो वह भी मातृभाषा में देते हैं, तो सोचिए जब आपके ऊपर उच्च स्तर की शिक्षा किसी विदेशी भाषा में लाद दी जाती है तो आपको कितनी मेहनत करनी पड़ती है। एक MBBS का कोर्स मात्र पौने दो से दो वर्ष का होता है अगर उसे मातृभाषा में पढ़ाया जाए जबकि उसमें एक बच्चा अपने 5 वर्ष लगा देता है। उसी तरह एक इंजिनियर साढ़े तीन सालों में Mtech हो सकता है अपनी मातृभाषा में जबकि इसे अंग्रेज़ी में 8 साल लग जाते हैं। एक बहुत बड़ा भ्रम जाल हमारे देश में फैलाया गया है कि अंग्रेज़ी विज्ञान की भाषा है। अगर ऐसा होता तो आज जापान, चीन, फ्रांस, जर्मनी सब अंग्रेज़ी में शिक्षा दे रहे होते! बेहद शर्म की बात है हमारे लिए कि जो भारत आज अंग्रेज़ी के चक्कर में फंसा हुआ है और जिसकी 1% जनता को उसी की मातृभाषा संस्कृत नहीं आती, उसी संस्कृत के ऊपर सबसे बड़ा शोध कार्य जर्मनी में चल रहा है! क्या वे लोग पागल हैं? उन्हें पता है कि इस भाषा में कितने अनमोल रत्न छुपे हैं जिन्हें बस निकालने की देर है। वैज्ञानिकों ने कंप्यूटर और space research के लिए सर्वोत्तम भाषा संस्कृत को ठहराया है (<http://post.jagran.com/NASA-to-use-Sanskrit-as-computer-language-1332758613>)। यह वही भाषा है जिसमें कभी हमारे दैनिक व्यवहार चला करते

थे। अगर हम इस मानसिक गुलामी से समय रहते बाहर न निकले तो वह दिन दूर नहीं जब यही पश्चिमी देश संस्कृत में सिद्धहस्त होकर ये कहना शुरू कर देंगे कि संस्कृत भाषा उनकी भाषा रही है और भारत जैसे पिछड़े और गुलाम देश ने यह भाषा हमसे सीखी है। तब हम गुलामों के पास सिर्फ एक ही चारा रहेगा और वो यह कि अपनी ही भाषा को विदेशियों से सीखें जैसे अपनी सभ्यता भुलाकर अंग्रेज़ी सीखी थी!

इस देश में अंग्रेज़ी के पोषक एक बात और कहते हैं कि अंग्रेज़ी एक वैश्विक भाषा है और अगर हमने इसे नहीं अपनाया तो हमारा देश पिछड़ जाएगा। ये वो लोग होते हैं जिन्हें या तो ठोस जानकारी नहीं होती या फिर अपनी हीन भावना को सही साबित करने की कोशिश करते हैं। विश्व में 200 देश हैं जिनमें से केवल 12 देशों में ही अंग्रेज़ी बोली जाती है, तो फिर अंग्रेज़ी विश्व की भाषा कैसे हो गई? हमारे देश में 10वीं कक्षा तक फ़ेल होने वाले छात्र सबसे ज्यादा अंग्रेज़ी भाषा में ही फ़ेल होते हैं (भाषा विषयों में)! हमसे छोटे छोटे ऐसे कई देश हैं जो हमसे सैकड़ों साल आगे हैं केवल अपनी मातृभाषा के दम पर! अगर कोई भाषा विश्व की भाषा कहलाने लायक है तो सबसे पहले है चीनी भाषा, फिर उसके बाद नंबर है हिन्दी का क्योंकि यही दो भाषाएँ हैं जो विश्व में सबसे अधिक बोली जाती हैं लोगों द्वारा।

अगर भाषा की समृद्धि की दृष्टि से भी देखा जाए तो अंग्रेज़ी बहुत ही कमज़ोर भाषा है। जिसमें मामा को भी अंकल कहा जाता है, ताऊ को भी अंकल कहा जाता है, चाचा को भी अंकल कहा जाता है; बस पिताजी को पापा कर दिया वरना उसे भी अंकल ही कर देते अगर हिन्दी में पिताजी 'प' से आरम्भ न हो रहा होता! इस भाषा में केवल 25000 ही मौलिक शब्द हैं और बाकी सब दूसरी

भाषाओं से उधार लिए हुए हैं। मैकॉले ने जो भी शिक्षा व्यवस्था बनाई उसका उद्देश्य भारतीयों को शिक्षित करना नहीं बल्कि मानसिक गुलाम बनाना अधिक था। अगर ऐसा नहीं होता तो वह अपने पिता को 1837 में वो खत न लिखता जिसमें उसने कहा था कि अब भारत में एक ऐसा बंदोबस्त होने जा रहा है जिसमें से भारतीयों को निकलने में सदियाँ लग जाएँगी। वे वही मानेंगे जो विदेशी होगा और उसी का अनुसरण करेंगे जो बाहर से आयातित होगा। आज की शिक्षा व्यवस्था में केवल 5% ही शिक्षा वास्तव में उपयोग हो पाती है, बाकी सब व्यर्थ हो जाती है! वह जानता था कि किसी भी देश की राष्ट्रभाषा उस देश का आत्मगौरव होती है। अगर आत्मगौरव छीन लिया जाए तो देश को गुलाम बनाने से कोई नहीं रोक सकता! दुर्भाग्यवश अंग्रेज़ों के बाद उनसे भी नीच सरकार इस देश में आई जिसने उस बबूल के वृक्ष को और भी ज्यादा पोषित किया! अगर ऐसा न हुआ होता तो आज भारत विश्वगुरु बन चुका होता जैसे पहले कभी था।

भारत के अलावा जो भी देश संघर्ष करके आज़ाद हुए हैं उन्होंने अपने राष्ट्रीय मूल्यों को अपनी मातृभाषा में घोलकर अपनी पीढ़ियों की रग रग में उतार दिया। इसी का एक उदाहरण है जापान, जो द्वितीय विश्व युद्ध में दिवालिया होने के बाद भी अमरीका की टक्कर में खड़ा है आर्थिक तौर पर। दूसरा उदाहरण है चीन, जिसको न केवल संयुक्त राष्ट्र संघ में एक महत्वपूर्ण दर्जा प्राप्त है बल्कि विश्व के कुल निर्यात में अपनी 25% भागीदारी भी रखता है! अगर ये देश अपने संस्कारों, अपनी संस्कृति और अपनी भाषा के बलबूते पर खड़े हो सकते हैं तो हम क्यों नहीं! ये वही देश हैं जो कभी हमारे शिष्य देश हुआ करते थे क्योंकि उस समय हम विश्वगुरु होने की हैसियत रखते थे अपने ज्ञान और संस्कारों के बल पर। जैसे ही ज्ञान और संस्कारों का लोप हुआ हमारी स्थिति वही हो गई जैसी आज है, दयनीय! इसमें अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए

क्योंकि समस्या भी हम हैं और कारण भी हम खुद ही हैं। इसीलिए यदि आप चाहते हैं कि हमारा देश फिर से उठ खड़ा हो तो उससे पहले हमें खुद उठ खड़ा होना होगा! हमें अपना सोया हुआ स्वाभिमान जगाना होगा! हमें वह शक्ति पुनः प्राप्त करनी होगी जो विश्व को एक सूत्र में जोड़ दे! हम वही भारत हैं जिसने विश्व को शांति और स्थायित्व का सन्देश दिया। आज ही मैकॉले के इस षड्यंत्र को बेनकाब करते हुए अपना स्वाभिमान और मातृभाषा के प्रति अपनी श्रद्धा जागृत करें! अगर संभव हो सके तो संस्कृत सीखने की चेष्टा करें परंतु अब उठ खड़े हों वरना हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा!

जय भारत!



